I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

संतालो का विवाह संस्कार

बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू
शोधार्थी,जनजातीय विभाग रांची विश्वविद्यालय रांची,झारखंड, भारत
शोध निर्देशक, रांची विश्वविद्यालय, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची, झारखंड, भारत

Corresponding Author: *बसन्ती सोरेन

Abstract

यह शोध-पत्र झारखंड की प्रमुख जनजाति 'लारकी' समुदाय के विवाह संस्कारों की परंपराओं, नियमों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लारकी समाज की विवाह पद्धति अन्य जातीय समूहों से भिन्न है, जो उनकी सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक संरचना और धार्मिक आस्थाओं का जीवंत उदाहरण है। विवाह को केवल सामाजिक संस्था ही नहीं, अपितु धार्मिक कर्तव्य और सांस्कृतिक उत्तराधिकार के रूप में देखा जाता है। इस अध्ययन में विवाह की विविध विधियाँ जैसे डोक्सेत, दूल्हा मांगना, घर ले जाना, ठेठ विवाह, और तलाक आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है। साथ ही यह भी देखा गया है कि आधुनिकता एवं सामाजिक परिवर्तन किस प्रकार पारंपरिक विवाह पद्धतियों को प्रभावित कर रहे हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 19-01-2025
- **Accepted:** 21-02-2025
- **Published:** 27-02-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025: 231-235
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

बसन्ती सोरेन, त्रिवेणी नाथ साहू. From Chalkboards to Clicks: The Digital Transformation of Adult Education in India. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(1):231-235.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

KEYWORDS: लारकी समाज, विवाह संस्कार, जनजातीय संस्कृति, डोक्सेत विवाह, समाजशास्त्र, पारंपरिक विवाह पद्धति, स्त्री भूमिका, आधुनिक प्रभाव, तलाक, पुनर्विवाह।

परिचय

भारतीय समाज में जनजातियाँ अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा एवं परंपराओं के कारण एक अलग पहचान रखती हैं। लारकी जनजाति झारखंड की एक प्रमुख आदिवासी समूह है, जिसकी भाषा, धार्मिक विश्वास, और विवाह संस्कार उसे अन्य समुदायों से विशिष्ट बनाते हैं। विवाह केवल सामाजिक अनुबंध नहीं बल्कि धार्मिक तथा सांस्कृतिक अनुष्ठान है जो जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के जीवन चक्र को नियंत्रित करता है। लारकी समाज में विवाह की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, जो सामाजिक आवश्यकता, आर्थिक स्थिति और रीति-रिवाजों के अनुसार

© 2025 बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अपनाई जाती हैं। इस शोध में इन्हीं परंपराओं की सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विवेचना की गई है।

उद्देश्य

1. लारकी समाज की पारंपरिक विवाह पद्धति का अध्ययन करना।
2. विवाह के विभिन्न प्रकारों जैसे डोक्सेत, घर ले जाने, ठेठ विवाह आदि की प्रक्रिया को स्पष्ट करना।
3. स्त्री-पुरुष की भूमिका एवं विवाह निर्णय में परिवार और समुदाय की भागीदारी का विश्लेषण करना।
4. आधुनिकता एवं बाह्य प्रभावों से विवाह परंपराओं में आए परिवर्तनों का मूल्यांकन करना।
5. तलाक एवं पुनर्विवाह की मान्यताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।

विवाह संस्कार

विवाह संस्कार को संताली भाषा में ''होड़ बापला'' कहते हैं। भारत में संतालों का तीसरा सबसे बड़ा आबादी वाले जनजाति (आदिवासी) है, जिनकी भाषा संताली है। संताली भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने के कारण भाषा साहित्य बहुत ही समृद्ध है।

आईए हम जानते है कि संतालों की विवाह संस्कार में उन प्राचीनतम संस्कृति की झलक इसमें मिलती है। संतालों की सर्वोच्च देवता को माराड. बुरू कहते है। इनकी पूजा संतालों के सभी संस्कारों में होती है तथा जन्म से लेकर मृत्यु तक तथा विभिन्न पर्व त्योहार से लेकर विवाह संस्कार तक सभी में उनकी पूजा होती है। संताल विवाह संस्कार में प्रचलित रीति एक पारिस मतलब एक गोत्रा में नहीं होता है न ही उनकी पारिस ज्ज्स्म् को बदला जा सकता है।

संतालों के विवाह संस्कार की ये विषेषता है कि बास्की को बास्की से शादी नहीं होगी, तथा मुर्मू को मुर्मू से शादी नहीं होगी। मुर्मू की शादी सोरेन से हो जाती है तो उनकी गोत्रा सोरेन नहीं होगी, मुर्मू ही रहेगी। ये हमारी संस्कृति विरासत है। इनको किसी भी परिस्थिति में बदला नहीं जाता है।

संताली की चार संस्कार पद्धति है इसमें से विवाह भी संतालों की संस्कार पद्धति में एक है। इनको संताली में लाकुड़ छाता लगचार कहते है।

1. जानाम छाटियार (जन्म के उपरांत)
2. चाचो छाटियार (जाति गोत्रों के लिए)
3. डागुवा छा़टियार (विवाह पद्धति)
4. मोरा छा़टिया़र (मृत्यु के उपरांत)

ये चार छूत मिटाना संतालों की पुनय कार्य होती है।

यहाँ विवाह संस्कार पद्धति या (डा़गुवा़ छा़टियार) के बारें में आलेख प्रस्तुत कर रहे है।

मानव समुदाय में अपनी योन संबंध एक स्वाभाविक क्रिया है। यह संसार का जीवन चक्र है जो अटुट संबंध आज विवाह के नाम से जानते है। संताली भाषा में विवाह को ''बापला'' कहते है।

बापला शब्द का अर्थ दो परिवार का सम्पर्क या मिलन माना जाता है। अन्य समाज की तरह संताल समाज में भी संताल विवाह में कुछ नियम है जो बड़ी कठोरता से पालन करते है। उनका उल्लंघन करने से सामाजिक दण्ड या बिठलाहा जैसे नियम का सामना करना पड़ता है। संतालोे़ं में समगोत्रिय विवाह तथा एक ही खुंट में नहीं होती है।

संतालों के धार्मिक दृष्टिकोण से नियम पालन करने वालों की कुल देवता पसन्द होती है और सुखी जीवन के लिए आर्षिवाद प्राप्त होती है।

संतालोे़ं की विवाह में सबसे पहले देखा देखी को ''े़पेल'' कहते है। ''े़पेलकुसी'' लड़की एवं लड़का दोनों पक्ष एक मध्य जगह में रायबार के माध्यम से होती है, रायबार को हिन्दी में ''बरतुहा'' कहते है।

खुषी राजी माता-पिता तथा वर-वधु एक संस्कार डोबोक् - जोहार के साथ होती है। इसके बाद जिस परिवार से संबंध बनाने जा रहे हैं लड़की पक्ष ''कुम्बा़ ओयोडे.'' प्रथा के तहत उनका घर परिवार एवं खानदान की मूल्यांकन या परख होती है। इसके पश्चात् की विवाह की अमला कड़ी से जोड़ते है।

प्राचीन समय की एक कहावत या लोक कथा है कि संताल लोग ''कृषि प्रधानता'' में विष्वास करते है। इसलिए धन - धान्य से परिपूर्ण के साथ नौकर - चाकर को ''गुती का़ड़मी'' कहते है। इससे भी महत्वपूर्ण है तथा पशु मवेषियों भेड़ बकरी सुअर के साथ - साथ कुत्ता बिल्ली भी आवष्यक उस वास्तविक समृद्ध परिवार में होना चाहिए।

''कुम्बा उयुड. पद्धति'' में लड़की पक्ष के दादा-दादी या नाना-नानी मूल्यांकन हेतु उस परिवार में यह संबंध जोड़ने की पहली कड़ी के रूप में होती है। वर - वधू तथा सगे संबंधी सभी खुषी से होने के बावजूद अगर ''कुम्बा उयुड.'' के पश्चात् ही शादी की तिथि तय होने वाली होती है। किन्तु ''कुम्बा उयुड.'' के तहत सारा घर परिवार कुल साधन धन दौलत एवं सारा परिवार की मूल्यांकन सही पाया या खाना पीना, आचार व्यवहार, रीति-रिवाज संग संस्कार आदि से संतुष्ट हो गये लेकिन कुत्ता और बिल्ली उस परिवार में दिखाई नहीं दिया, जिस कारण से विवाह विच्छेद यानि नहीं हो सका। उनका निर्णय था कि संताल परिवार में कुत्ता बिल्ली का होना अनिवार्य है। इनके बिना धन की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस कारण से विवाह नहीं हो सका, ऐसा भी पद्धति इन संस्कृति में प्रचलीत थी, सवाल था 'बोंगा किसा़ड़' कहने का मतलब ये धन सम्पत्ति अधिक दिन तक नहीं टिकेगा, क्योंकि धन रक्षा करने वाले यहाँ दिखाई नहीं पड़ता है। यानि कुत्ता एवं बिल्ली नहीं थी।

जो भी हो यहाँ प्राचीन परम्परा की एक घटना मात्रा है इसकी संताल समुदाय भूल नहीं सकता। जन मानस में जो चीज अंगीकृत हो चुका है, उनका संस्कृति से जुड़ाव है और हम इन्कार नहीं कर पाते है। संतालो की विवाह पद्धति में मन पसन्द पहली शत्र है। हम हर दृष्टि से खरा उतरेंगे तभी उस परिवार के साथ विवाह संबंध जोड़ना होता है। विवाह तब होता है जब दुल्हा-दुल्हन बालिग हो, एक दूसरें को जानने का ज्ञान हो, बाल विवाह संताल समाज में वर्जित है।

लड़कियों की शादी लगभग 18.21 वर्ष की आयु तथा लड़का भी 21 - 22 वर्ष की आयु में अधिकतम होती है। शादी पूर्व यौन संबंध को बुरा मानते हे पर किसी प्रकार से अगर कुंवारी गलती हो जाने से गर्भवती होती है तो इनकी जिम्मेदारी गाँव के जोग - मांझी को दण्डित होना पड़ता है और परिवार में जो मुखिया है पिता को दण्ड का भी सामना करना पड़ता है। जोगमांझी के गाँव का सामाजिक प्रषासन का प्रधान माना जाता है।

संताल समाज में शादी विवाह हेतु अनेक प्रकार की पद्धति या विधि प्रचलित है। जिसमें हम मुख्य रूप से संताल विवाह पद्धति को यहाँ जानेंगे।

संताल संस्कृति में प्राचीन काल से ही विवाह के नियम षिवरात्राी के पश्चात् ही होती है यानि षिव विवाह के पहले किसी भी परिस्थिति में नहीं

© 2025 बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

होती है। यही इनकी विषेषता है इसमें प्राचीन मान्यता के आधार पर प्रचलन है इनको हम बाद में जानेंगे।

संताल विवाह मुख्य रूप से दो प्रकार है:-

1. घर जावांय बापला - (जिनका पुत्रा नहीं है।)
2. सा़दाई रायबार बापला - (सम्पूर्ण परिवार परिपूर्ण है)

घर जावांय बापला पद्धति में - संताल परिवार में कुछ ऐसा परिवार होता है जिनका लड़का नहीं है या तो एक बेटी है या दो चार बेटी है तो प्रचलित प्रथा के अनुसार उनका गोतिया भाई या कोई वैसे रिष्तेदार नहीं है जो उस जमीन या परिवार के जोत आवाद कर सके। चूंकि संताल समाज एक पुरूष प्रधान समाज है इसके बावजूद इन विधि से उन परिवार को अपनी परम्परा के अनुसार सामाजिक अनुष्ठान के द्वारा परिवार के सबसे बड़ी बहन या सबसे छोटी बहन को घर जावांय विवाह पद्धति के द्वारा सम्पन्न होने से इस परिवार के उनकी खानदान के रखरखाव के लिए अधिकार दिया जाता है।

घर जावांय बापला पद्धति में लड़का को ही लड़की के घर में शादी आयोजन होते है और लड़का पक्ष के वधू मूल्य नहीं चुकाना पड़ता है। सारी प्रक्रिया लड़की पक्ष का खर्च एवं आयोजन का सारा भार लगभग लड़की पक्ष को ही वहन करना पड़ता है। ''घर जावांय बापला'' पद्धति में शादी के साथ ही साथ लड़की के पिता का चल अचल सम्पत्ति उनके उसी दिन गांव के दसों पचों के सम्मुख तथा लड़का पक्ष के प्रषासनिक व्यक्ति समाज के लोगों के सामने प्रस्तुत या दिखाई पड़ता है तथा खेत बारी - भूमि का सभी हिस्सा में शादी के पश्चात् उनको घुमाकर दिखाया जाता है और घर में (मान्डवा लातार) मंडप के नीचे में शादी चटाई पर होती है। चटाई को संताली में पा़टिया कहते है। (ये खजुर के पत्ते का होता है)

उनका विषेषता है कि खजुर का पत्ता बुढ़ा होने पर भी डाल नहीं छोड़ती है उसी प्रकार विवाह के समय उस चटाई पर बैठने से विवाह संबंध नहीं टुटेगी। इसमें सही विष्वास माना जात है।

2. सा़दाई रायबार बापला - यह विवाह पद्धति सबसे उत्तम कोटि के जन विवाह पद्धति है। इसमें विधिवत विवाह की प्रक्रिया के तहत होती है। कोई किसी प्रकार की किन्तु या परन्तु नहीं होती है।

संताल विवाह हमेषा षिवरात्राी के पश्चात् ही सम्पन्न होती है, तथा सिर पंचमी (बसंत पंचमी) के पश्चात् प्राचीन काल में तिलक चढ़ी होती थी। ये विधि अभी भी संताल समाज में प्रचलन है। आधुनिकता की होड़ में आज थोड़ा इसकी लोगों की अत्यधिक व्यस्तता के कारण प्रभाव बदल रहा है। जो भी हो संताल विवाह पद्धति अभी भी प्राचीन सभ्यता में से एक समृद्धषाली व्यवस्था के द्वारा सम्पन्न होती है जो हम सा़दाई बापला के रूप में जानते है। विवाह के विधि विधान एवं विभिन्न पड़ाव इस प्रकार है।

1. ेपेल कुसी
2. कुम्बा उयुड.
3. ओड़ाक् दुवार ेल
4. जावांय धुती
5. बा़हु बान्दे
6. टाका चाल
7. बापला - मान्डवा
8. चा़डी कुटा़म
9. मान्डवा ओतोड़
10. इदी आ़गू रूबाड़
11. छापाडाव
12. सकाम ओड़ेच्
13. बपला रूबा़ड़

इन 13 सद् कर्म होने के पश्चात् संताल विवाह सम्पन्न या समाप्त होती है। इन सभी बिन्दुओं को जानने की अतिआवष्यकता है। संताल विवाह की विषेषता को जानने के बहुत सारी पुरातन संस्कृत या मन पसन्द की एक झलक के रूप में दिखाई पड़ता है। इनको हम धरोहर के रूप में संजोये रखने की आवष्यकता है जो मानव समुदाय विकृति की ओर अग्रसर हो रही है। इनको एक सूत्रा में लाने मात्रा का तरीका इसमें दिखाई पड़ता है। चलो हम इनकी संस्कृति के विवाह पद्धति नियम को अध्ययन कर समझने का प्रयास करते हैं।

1.ेपेलोकः- ेपेल को हिन्दी में देखा - देखी या पर पसन्त को कहते है। वर - वधू को एक निष्चित स्थान पर एक छोटी कार्यक्रम आयोजन कर बुलाया जाता है। डोबोक् जोहार पद्धति से दोनों पक्ष को देखा परखा जाता है। लड़का पक्ष से माता, मौंसी तथा मामी या चाची के द्वारा उन लड़की को तेल लगाते है इससे यह पता चलता है कि लड़की के शरीर कैसे हैं और होने वाली वधू अच्छी है या नहीं इस प्रकार वर पसन्द (ेपेल) कार्यक्रम सम्पन्न होता है। रायबार (आ़गूवा) के द्वारा इनकी सारी सूचना दोनों पक्ष को एकट्ठा करते है। तब पसन्द होने की स्थिति में दोनों पक्ष लड़की के अभिभावक तथा लड़का के अभिभावक एवं रायबार के द्वारा वहाँ (खुंटी उरीच) बात पक्का होने की पीलर गाड़ते है। ेपेल का अंतिम कड़ी है।

2. कुम्बा उयुड.:- संताल विवाह का कुम्बा उयुड़ प्राचीन विवाह पद्धति का एक नियम मात्रा है। विवाह के परिवार का सूत्रों के द्वारा पता लगाने के पश्चात् स्वयं इनकी जाँच परख हेतू परिवार के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा छानबीन या मूल्यांकन उस घर परिवार खानदान कि की जाती है और हां या ना की सारी अंतिम फैसला उनकी ही विचार पर निर्भर होती है। इनको हम कुम्बा उयूड. कहते है जो विवाह की दूसरी बड़ी कड़ी के रूप में जाना जाता है। प्रचीन समय में इनकी प्रतिवेदन के आधार पर ही विवाह सम्पन्न होता था।

3. ओड़ाक् दुबार ेलः- परिवार के गे बार सदस्यों यानि बारह सदस्यों का एक टीम फिर लड़की पक्ष के लोग जाते हैं इस टीम में माता-पिता, मौसी - मौसा, मामा - मामी, काका - काकी, बूआ - फूफा आदि लोग शामिल होते है। ये टीम सही सलामत होने पर लड़की पक्ष की लड़का पक्ष के घर आते है। अधिकतर समानता के लिए प्रचलित है लेकिन ज्यादा महत्व लड़की पक्षों के ही होते है।

4. जावांय धुतीः- संताली भाषा में जावांय धुती तथा हिन्दी में तिलक चढ़ी कहते है। तिलक उत्सव लड़की पक्षों के लोग संताल समुदाय में गाँव समाज के साथ अपने सगे संबंधी तथा कर कुटुम्ब को भी मौका दिया जाता है कुल मिलाकर 100 से 200 लोग तक जाने की संख्या होते है, तथा तरह - तरह की साज बाज तथा धुती - दाहड़ी और वर्तमान में आवष्यकता के अनुरूप दुल्हा को तिलकोत्सव में नवाजा जाता है जो सामाजिक विधि द्वारा आयोजन कर उनका सम्पन्न होती है।

5. बा़हु बान्देः- तिलक चढ़ी जिस प्रकार लड़का पक्ष होता है उसी प्रकार लड़की (दुल्हन) को उनकी पहनावा तथा नववधु को कपड़ा लत्ता देने की परम्परा को बा़हु बान्दे कहते है। वर पक्ष यानि लडत्रका पक्ष के फिर वही नियम - माता-पिता, मामा-मामी, काका-काकी 10 से 12 जोड़ा जो लड़का पक्ष के रिष्तेदार है उनको शामिल करते है। बा़हु बान्दे में वहाँ सामाजिक परम्परा होती है कि आधा शादी यानि ''सासाड़ छाडवी'' एक

© 2025 बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तरह का होरोक् चिखना उनको रिसर्व किया जाता है ताकि दूसरें के साथ शादी नहीं किया जा सकता है क्योंकि शादी की रस्म की प्रायः 70 प्रतिषत अदा किया जाता है।

6. टाका चाल:- संताल विवाह उत्सव में ''टाका चाल'' को 'वधु मूल्य'' चुकाया जाता है। गांव के प्रसिद्ध लोक सेवक जोग मांझी द्वारा यह कार्य पुरा की जाती है। टाका - चाल को गोनोड. टाका यानि वधु मूल्य को कई भागों में हिस्सेदारी होती है उन्ही अपनी हिस्सा में बाँट दी जाती है कुल मूल्य 12 रू0 है।

माता - 3.00 रू0
पिता - 5.00 रू0
माता के माता - 1.50 रू0
पिता के माता -1.50 रू0
उफाड़ तोपाक् मांझी मांडला - 1.00 रू0
ग्राम प्रधान मांझी को -
टोटल - 12.00 रू0

गांव के प्रषासन देवादष नारायणे को दी जाती है। इस विवाह कार्यक्रम कपो सम्पन्न कराने में उनकी भूमिका के एवज में की जाती है। यह रस्म उन सभ्यता संस्कृति की थी जब सोना का सिक्का था लेकिन वहीं अभी भी प्रचलन है वधु मुल्य आधुनिक युग के हिसाब से 12000 ग 5 त्र 60000 रू0 होना चाहिए।

7. मान्डवा बापला:- विवाह समारोह में वधु मूल्य चुकाने के पश्चात् विवाह समारोह का आयोजन होता है। इसमें संताल संसकृति के अनुसार माण्डवा को मण्डप या शादी मण्डप होती है। चार खुटा बराबर तथा बीच में चैकरखुंटी - सखुआ एवं मातकोम (महुआ) का होता है और वहाँ करमा ठिली यानि एक जोड़ा कलष रखा जाता है। मण्डवा दोनों पक्ष में होती है और वहाँ दाक् बापला एवं ''सुनूम सासाड. ओजोक'' जो संतालो की रिवाज में होती है। रात में हल्दी लेपन तथा दूसरे दिन शादी के लिए बारात जाते है। वहाँ साराती गाँव में विषेषता सही संतालों में अपनी खर्च स्वयं वहन करते है और शादी हो कर वधु का ेले आते है। सारा खर्च लड़का पक्ष स्वयं वहन करते है। मंडप में एक ''गोला खास्सी'' की बलि दी जाती है उनका भोज के रूप में सभी बाराती को जो भी हो सके प्रसाद के रूप में सबको खिलाया जाता है तथा द्वितीय दिवस या दूसरे दिन गिडीचुमावड़ा (बान्दापोन) होती है, अर्थात वधु को जो गिफ्ट दिया जाता है जो अपने सगे संबंधी नाता रिष्तेदारों के द्वारा दिया जाता है और वे गिफ्ट वधु ने अपने साथ ससुराल ले जाते है। इसके बाद वधु को विदा दी जाती है।

संतालों की शादी बाँस की बनाई गई एक डोली होती है जिसको संताली में ''दावड़ा''कहते है, दावड़ा को बोंगा दावड़ा भी कहते हैं यह देव प्रथा है जो इसे दावड़ा बोंगा भी कहते है। इस पर विष्वास है कि आदि काल में माराड़ बुरू ही ऐसी पद्धति का निर्माण कर होड़ होपोन के शादी में व्यवहार करने हेतु षिक्षा दी है। वह प्रथा आज भी प्रचलित है।

शादी कर वापस लड़का के घर आते हैं तो ''दाराम दाक'' विधि से स्वागत होती है और वर वधु को मांझी थान में दर्षन के पश्चात् समस्त गांव या टोला में ''गुड़ जोम'' के नाम से घुमाया जाता है ताकि प्रत्येक घर परिवार के साथ के लोग उनसे परिचित हों।

ठसके बाद ''पाड़छाव आदेर'' घर में होती है। सास यानि लड़का की माँ द्वारा तथा उनकी बड़ी बहन लड़का द्वारा अपनी मूल घर में प्रवेष कर सम्मान दिया जाता है। इसके बाद गोला खास्सी की बलि दी जाती है। इसके बाद गिडी चुमावड़ा होती है लड़का घर में भी गिफ्ट प्रदान की जाती है वर और वधु दोनों को मंडप के नीचे बैठाकर गिडी चुमावड़ा होती है। इसी को संताली में गिडिचुमावड़ा कहा जाता है।

यह प्रथा है कि जो मण्डप में बलि दी जाती है उनका मांस वर वधु को खाना वर्जित है। उसके लिए अलग व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार शादी सम्पन्न हो जाती है।

लड़का के घर में आरूप जांगा तथा पालाट कार्यक्रम के तहत वर वधु की कपड़े को बदले जाते हैं एवं नया कपड़ा दोनों को दिया जाता है और लुमती बारीत को बिछा दी जाती है लमती बारीत को लोकोनिया हिन्दी में कहते है।

इसके बाद वर वधु फिर ससुराल जाते है यानि लड़की के घर वापस जाते हैं और इसके साथ चाड़ी दाड़े साथ में ले जाते है तब शादी की सम्पूर्ण नियम पूरी होती है। चाडी दाड़े का मतलब है कि वह लड़की आज दुल्हन बन गई है। इनका जाड. हों जाड. तोरोच् हों जिमा दे देया एवं आज के बाद वह लड़की अपनी घर की जो भीतर कांत है जो देवता स्थान घर में है वहाँ की प्रवेष वर्जित कर दी जाती है। वह नया घर ससुराल में उसका स्थान प्राप्त हो गई है इसलिए यहाँ देवी - देवता एवं अन्य अधिकार जो है वह ससुराल में स्थानान्तरित की गई।

चाड़ी दाड़े कुटाम के साथ की सम्पूर्ण उत्सव समाप्त होती है।

अन्त में गांव के लोगों का जो शादी के दौरान विवाह परिवार को साथ दिया, सलाह दिया तथा मदद किया दिन रात उनके साथ रहा उसका मूल्य मान्डवा ओतोड़ यानि मण्डप को खोलना एवं नाचने गाने के मजदूरों के रूप में साड़ सारू दोजा हाण्डी (पेय पदार्थ) खाने की चीज जो हो मांग की जाती है, जो मांझी के द्वारा इस प्रकार संताल विवाह संस्कार या पद्धति पूर्ण हो जाती है।

विवाह सम्पन्न हो गई सभी को अपना कार्य का मूल्य या मजदूरी लेन-देन समाप्त हो गई।

10. इदि आगू रूवाड़:- इसके बाद वर - वधु के आने जाने हेतु रास्ता साफ करने के लिए वधु को अपनी घर तथा वर को भी अपनी घर में रहने के लिए या आने के लिए दोनों पक्षों का आवागमन होते है। लड़की पक्ष के लोग जाते है और पांच जोड़ा जो समधी - समधीन की रिष्ता में आते हैं इस बार रिष्तेदारों की बारी आती है, खाते है, नाचते हैं, पीते है गोतिया नाता रिष्ते को परिचय देते है और दूसरे वधू को यानि अपनी बेटी को मायके ले जाते है और वहां से आते है। यही रीति है मौज मस्ती का। फिर ठीक सप्ताह के अन्दर फिर लड़का पक्ष के लोग उसी तरह पांच जोड़ा जाते है। - माता - पिता, मामा - मामी, काका- काकी आदि। और उसी प्रकार वहां की कार्यक्रम होते है, इसके पश्चात् वधु को फिर वापस ससुराल ले जाते है। इस प्रकार यदि आगु रूवाड़ कार्यक्रम भी सम्पन्न होते है। तब वर - वधु जब भी आने - जाने के लिए रास्ता खुल जाती है।

11. छापाडाव (क्पअवतेम) तालाक:- संताल समाज में भी तलाक होती है। जिसको संताली भाषा में छापाडाव कहते है। विवाह मनुष्य जनम में एक महत्व रिष्ता है। इस रिष्ता को हम एकाएक नहीं तोड़ सके। इसकी अनेक कारण हो सकती है, फिर भी समुदायों के द्वारा जो संस्कृति में मिला है विरासत के रूप में उसे तो निभाना ही पड़ता है। शादी का रिष्ता संताल समाज में बाला-साका के पश्चात् पुत्रा विवाह के बाद भी कभी - कभी तलाक भी हो जाती है किन्तु पुत्रा/पुत्राी प्रेम के कारण तलाक विधि द्वारा शादी विच्छेद के पश्चात् भी नहीं टूटती है संबंध। संतालो में विवाह विच्छेद या तलाक दो कारणों से हो सकती है:-

लड़की का मत है कि हम इस लड़के के साथ परिवार अब नहीं बसायेंगे।

© 2025 बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लड़का का मत है कि हम इस लड़की के साथ किसी भी परिस्थिति में नहीं रखेंगे पत्नी के रूप में।

तब गांव के जोग मांझी इसकी उचित निर्णय के बाद दोनों का संबंध विच्छेद करते है एवं उनकी लेन-देन दोनों पक्ष के मांझी हाड़ाम देवादष नारायण द्वारा निर्णय के पश्चात् तलाक या छापाडाव दी जाती है। कभी कभी छापाडाव के बाद भी आपस में मिल जाते है लेकिन समाज के द्वारा पुनः मिलन हेतु दोनों को विधि सम्पन्न खर्च देना पड़ता है। दोनों नववधु को।

11. साकाम ओड़ेच्:- संतालों के विवाह विच्छेद को छापाडाव कहते है। विवाह विच्छेद में कभी-कभी वापस घर वापसी भी होते है। और साकाम ओड़ेच् के पश्चात् दोनों मिलना असंभव है। चूकि जन्म - जन्मांतर के लिए साकाम ओड़ेच् विधि देवताओं द्वारा कसम खाने के पश्चात् मांझी थान में की जाती है। यह बहुत ही कठिन पद्धति है जो अमल करता है उसके लिए ठीक हैे नहीं तो कहा जाता है अन्होनी घटना होती है, अर्थात् साकाम ओड़ेच् विधि तलाक का सर्वाधिक खतरनाक पड़ाव है। इसके पश्चात् अंतिम तौर पर विच्छेद होते है। इस जन्म में दोनों का मिलन संभव नहीं होते है। अगर साकाम ओड़ेच् पश्चात् एकदम मिलना ही होती है तो पुनः विवाह पहले जैसा पूर्व में हुआ था वैसा विवाह सम्पन्न करना पड़ेगा। अन्यथा सामाजिक मान्यता नहीं होगी, कहा जाता है अगर रिति-रिवाज के अनुपालन नहीं की स्थिति में उनका विवाह - जीवन नहीं टिकती है, अर्थात दोनों में से एक की अकारण या अकाल मृत्यु होने की दण्ड भोगता है।

12. बापला रूवाड़:- संताल समाज के संस्कृति की संस्कार में यह रिवाज है कि जिस माता पिता द्वारा 10-12 बच्चे पैदा होते हैं तो उनका पुनः विवाह सा़दाई बापला विधि से सम्पन्न करने की प्रथा है और समाज में शौभाग्यषाली माना जाता है। ऐसे परिवार बहुत कम ही मिलते है। भाग्यषाली व्यक्ति के नाता रिष्ता जोड़ना भी सगुन मानते है।

अतः संताल एक देव संस्कृति की अनुपालन करते है। माराड़ बुरू इन लोगों का सर्वोच्च देवता है। इस प्रकार हम जानते हें संताल समाज में विवाह संस्कार एक आदिम संस्कृति की विरासत का धरोहर है। इसे बचाकर रखा जाना चाहिए।..... जोहार

निष्कर्ष

लारकी समाज की विवाह पद्धति उनके धार्मिक विश्वास, सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक संरचना का दर्पण है। विवाह केवल एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं बल्कि सामुदायिक सहमति का प्रतिफल होता है। डोक्सेत विवाह, घर ले जाकर विवाह, ठेठ विवाह, तलाक और पुनर्विवाह जैसी विधियाँ दर्शाती हैं कि लारकी समुदाय में विवाह एक लचीली किन्तु सुसंस्कृत प्रक्रिया है। परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में जहाँ कुछ रीति-रिवाज विलुप्त हो रहे हैं, वहीं कुछ ने नया रूप भी लिया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि लारकी विवाह संस्कार न केवल समाज की संरचना का आधार हैं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण की आधारशिला भी हैं।

संदर्भ

1. वर्मा, आर.सी. *भारतीय जनजातियाँ.* राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2000।
2. महापात्र, लक्ष्मीधर. *आदिवासी विवाह पद्धति.* ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट, रांची, 1997।
3. Xaxa, Virginius. *Tribes and Social Change in India*, Routledge India, 2005.
4. Minz, Sushil. *Customary Practices among the Tribals of Jharkhand*. Tribal Studies Series, Ranchi University.
5. Oraon, S. K. *The Oraons: Culture and Society*, Anthropological Survey of India, 2002.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/